साक्षात मोक्ष

अथवा

मोक्षमार्ग देनहार मित्र.



प्रथम दिन

मित्र समागम.

मित्रो! आज अपने समागमका पाहिला दिन है. मनुष्यके मित्र होता है नरकी संगतसे अधिक मित्र सबको पसंद होती है अपन अपने दुःख सुखकी वर्णन मित्रके साथ करते हैं. यदि अपनेसे अधिक मित्र विद्वान और बुद्धिमान हो तो अपनेको बहुत सकते हैं. व्यवहारके अनेक अच्छे बुरे प्रसङ्गोंमें की सम्मति अपने लिये बहुत उपयोगी होती है ममें अपन पकडे गए हो और उसमेंसे छूटनेका कोई मार्ग नहीं दिखता हो तो ऐसे प्रसङ्गमें बुद्धि- अपना दुःख तोड देता है. और अच्छा रास्ता

दिखाता है. शीघ्र अच्छा मित्र मिलना यहभी सत्कर्मपर निर्भर है.

मनुष्य मित्रो ! तुमको सत्कर्म न करनेसे अच्छा मित्र न मिला हो तो निराश नहीं होना चाहिये मैं तुमको वैसे मित्रकी नाइ कुछ बताता रहूंगा लेकिन तुम मित्रोंके साथ बैठकर पूछो और वे उस बातका उत्तर देवे वैसे जीवित मित्रकी नाइ तो हमेशा मैं बोलनेके समर्थ न होऊं तोभी एक बुद्धिमान मित्र तुम्हारे कल्याणके अर्थ जितना तत्पर रहे और तुम्हारा हित करनेको जितना उत्साह बतावे उससे कई गुना अधिक उत्साह मैं अवश्य बताऊंगा तुम्हारे सुख प्राप्त करनेके मार्ग तुम्हारे सामने मीठे वचनोंसे निवेदन करूंगा. तुम्हारे इस मनुष्य जीवनमें जिस वस्तुके जाननेकी अगत्य है उनको मैं बनते प्रयास कहूंगा और ये तुम्हारे इस भवमें उपयोगी हो वैसाही नहीं किन्तु जब तुम इस संसाररूपी घोर अरण्यसे विदा होंगे तब ये तुमको परभवमें बहुत सुख देंगे. कितनिक बातें मैं तुमको ऐसी कहूंगा कि, इस [illegible] में विरलेही जानते होंगे. तुम्हारे जन्म, जरा, मरणादि दुखोंसे मुक्त होनेके उपायोंसे मैं तुम्हारे हृदयको दृढ कराऊंगा. इस

भयङ्कर दुःखरूपी संसारमें किस तरह चलनेसे तुम अधिक सुख प्राप्त कर सकोगे यहभी मैं तुमको प्रसङ्गसे समझाऊंगा. बहुतसी वातें तुमको मेरे समझाते वक्त कडवी लगेंगी परन्तु तुम मुझे शीघ्रही मत त्यागना. जिस तरह कडुकडुआतेके कडवे उकालेको पिलाकर वैद्य अपना कुज्वर हटाता है इसी तरह तुम्हारे चेतनको नाटकके नाइ सहज गफलतसे भटकानेवाले तथा दुःख देनेवाले तुम्हारे चेतनरूपी घरमें घर करके बैठनेवाले जो दुश्मन हैं, उनको मेरे कडवे वचन कडुकडुआतेकी नाइ हटाएगे यानि मैं अपने कडवे वचनोंसे तुम्हारा हित करनेको चाहता हूं. ऐसा जानकर तुम धीरे २ मेरी बात सुनो. सुनकर बैठे मत रहो परन्तु उसके विषयमें विचार करो. यदि मेरी बात प्यारी लगे तथा इसतरह चलनेसे लाभ होनेकी संभावना हो तो प्राण जाए तो चिन्ता नहीं परन्तु इसको मत छोडो और अपनी दशा समझानेके लिये तन, मन, धनसे कटिबद्ध हो जाओ. ये वातें तुम्हारे जैसे विच. क्षणोंको तो वाआशानी समझमें आ सकती हैं अब देखो! आजसे अपनी मित्रता हुई है मैं नित्य आकर कुछ न कुछ तुम्हारे लाभकी वातें क.९.

मुझे कुछ पूछना हो तो भलेही पूछना. मुझे ठीक लगेगा तो उसी समय उत्तर दूंगा. नहीं तो पीछे सोचकर उत्तर दूंगा. आज प्रथम दिन है अतएव और कुछ न कहकर जाता हूं पुनः कल मिलूंगा परन्तु पुनः कहो आज मेरी इतनी वार्ताका क्या सारांश ग्रहण किया ? क्या विचारमें पडे ? लो तब मैंही कह दूं पहिले मुझे तुमको एक कल्याण करनेवाला सच्चा मित्र गिनना चाहिये मेरी बात तुम्हारा हित करनेवाली है और इस लोकमें तथा परलोकमें तुमको सुख देनेवाली है ऐसा जानकर तुमको प्रसन्नतापूर्वक श्रवण करना चाहिये तुमको पसंद न आवे वे बातेंभी तुम्हारा कल्याण करनेवाली है इस लिये तुमको अवश्य श्रवण करनी चाहिये और उन श्रवणकी हुई वार्ताको न भूलकर उस मुताबिक आग्रहपूर्वक वर्त्तन करो !

लो अब मैं जाता हूं.



होने लगी पुनः अपने जो विचार करनेका है वह यह है कि, अपन सबको सुखकी ईच्छा है सुख याने अपना मन आनंद में रहे और यहांसे विदा होने पर अच्छी गतिमें जावे और सब ऋद्धिएं मिला करे परन्तु यह अपने जो झूठ बोलते हैं उसमें एक झूठके बजाय दो झूठ हो जाते हैं एक तो उस कामको अपन न करते दूसरा झूठ बोलते हैं और जब झूठ मालूम होनेको हो जाता है उसमें और कई प्रकारके झूठ करने पडते हैं झूठे गवाहि विगेरा पेश करने पडते है इस तरह हजारों तरहके मामलोंमें यहांतक झूठ बोलते हैं और निष्कलङ्क मनुष्य तकको झूठी गवाही देकर मरवा डालते है या खुदका कसुर लाखं झूठ बोलनेपर निकल आवे तो खुदको जेलाग्रहाकी यात्रा करने जाना पडता है और यहांसे विदा होनेपर नीच गतिके पात्र होना पडता है इस लिये सत्य प्रियताके प्रेमी होना चाहिये क्योंकि यह समाजके लिये बहुत अच्छा बंधन है कि, जिससे समाजकी बहुत बुराइएं दूर हो सकती हैं सिरफ झूठ बोलनेके डरसेही समाजका बहुत कुछ उद्धार हो सकता है अब यह सोचना चाहिये कि, घर २ में व्याप्त [illegible] इस मिथ्या भाषणका मूल क्या है इसका मूल डर

है और डर जानेही पर लोग झूठका साहरा लेते हैं भीरुता और कायरताके सिवाय इस मिथ्या भाषणका और कारण क्या कहा जा सकता है कईएक सामान्य गुणोंके अभावसे यही भारी दोष उत्पन्न होता है और अपने अपराध जनित सङ्कटसे बचनेके लिये बार २ उससे झूठ बोलना पडता है झूठ बोलनेसे उसी घडी उसके भविष्यकी आशाएं सर्वदा नाश हो जाती हैं हृदयके ऊँच भाव सब एक २ करके निकल जाते हैं अपना झूठ स्वीकार करनेसे सत्यवादीको दंड जरुर मिलता है किन्तु सत्यके प्रभावसे उसका हृदय उस दंडकी अपेक्षा अधिक उन्नत होता है. उसके मनसे सारा भय भाग जाता है उसे झूठ बोलनेके लिये कभी बाध्य नहीं होना पडता है उसके मनमें शान्ति, हृदयमें साहस बोलीमें स्पष्टता और दृष्टिमें तेज भरा रहता है सभ्य समाजमें उसका आदर होता है अच्छे गुणोंकी प्रतिष्ठा सबही सभ्य देशोंमें होती सत्य भाषण एक वह प्रधान गुण है जिसे धारण मनुष्यमात्र गौरवान्वित हो सकता

गाथा

लिये

तैयार

जिन सब गुणोंकी ज्योतिः में उन गुणोंको प्राप्त

गुणोंको कोई एक साथही प्राप्त करलेना चाहे यह कभी नहीं होसकता है एक २ गुणका अभ्यास करके लोग अपनेको अनेक गुणोंसे अलंकृत करे अवगुण अनायास ही प्राप्त होता है किन्तु गुण विशेष साधनका फल है यदि तुम गुणोंका संग्रह करना चाहोतो उसका सुगम उपाय यह है कि, सबसे पहिले तुम सत्यका सहारालो और दृढता पूर्वक साहरालोकि हम झुठ कभी नहीं बोले बस यह एक सत्यका आग्रह ग्रहण करने सेही जितने गुण हैं वे आपसे आप तुम्हारे पास आएंगे, क्योंकि, ज्ञानही शक्ति है ज्ञानका स्वरूप सत्य है इसलिये तुम सत्यप्रियता के प्रेमी होकर दो चारवार बोलकर देखो आपसे आप सिद्ध होजाएगा अब आज देर हो गई है इसलिये अपना भाषण यहां ही खतम करता हूं

तृत्य दिन.

गुणानुरागीको नमस्कार करना योग्य है.

प्रियमित्रो! आज मैं थोडी देर पहिले आया हूं और आज मैं यह कहनेवाला हूं कि सद्गुणानुरागीको नमस्कार करना योग्य है या क्या? जिसको तुम अच्छी तरह ध्यान देकर सुन-

नोगे और उन महात्माओंके कदमपर चलकर खुदका तथा इस अघोर पाप रूप संसारका उद्धार कर सकोगे सर्व जातियों में मनुष्य जाति उत्तम हैं और यह वार २ मिलना अति दुष्कर है इसलिये हरएकको तीर्थङ्कर * भगवानके वचनों तथा उनके कदमोपर चलनेसे उसके सार्थक करनेके सब उपाय सहल होजाते हैं परन्तु वर्तमानकालमें भरतक्षेत्रमें विचरता तिर्थङ्कर न होनेसे उनके वचनरूप आगमसे ही उत्तम रस्ता बतानेवाले है अतएव उनको नमस्कार करना योग्य है:—

सयलकल्लाण निलयं, नमिऊणं तित्थनाह पयकमलं; परगुणगहणसरुवं, भणामि सोहग्ग सिरि जणयं ॥ अर्थात् सकल कल्याण के आश्रयरूप तीर्थनाथ भगवान के पद कमलको नमस्कार करके सोभाग्य लक्ष्मीको देनेवाले परगुण गृहण स्वरूपको कहता हूं.

तीर्थङ्कर भगवान ने अपने पूर्व जन्म में जान लियाथा

---

* नोटः—महावीर भगवान के गुण देखने के लिये महावीर चरित्र—देखो जो हमारी तरफसे अल्पकाल में तैयार होकर छपेगा अथवा श्रीमद् हेमाचार्यकृत महावीर चरित्र देखो जो भावनगर जैनधर्म सभासे छपा है.

कि, दूसरोंके गुणों में लक्ष रखना अच्छा है अतएव उन्होने हरएक मनुष्य के गुणग्रहणकर अपने आपको गुणसे परिपूर्ण किये और सर्वज्ञ तथा केवलज्ञानी होते हुए भी किसीके अवगुणोंको प्रकाश नहीं किये क्योंकि, ऐसा करनेसे खुदको या दूसरेको कुछ लाभ नहीं है इतनाज नहीं वे दोषीको दोषीभी नहीं कहते थे किसीके आत्माको कुछभी खराब लगे वैसा केवलज्ञानी होतेहुए भी नहीं कहतेथे अतएव तीर्थङ्कर भगवान हमेशा नमस्कार करने योग्य हैं क्योंकि उनपर प्रेम करनेसे अपना आत्मा ऊंचताको प्राप्त होता है.

यह बात तो निर्विवाद सिद्ध है कि, जगतमें सकळ गुण निधानतो विरले ही होते हैं और हरएक मनुष्य में रहे हुए हजार अवगुणोंको छोडकर उसके अन्दर रहा हुआ एक गुण गृहण करना चाहिये कारणकि गुणी होना होतो गुण देखनेकी टेव पाडनी चाहिये यह बात चरम तीर्थङ्कर महावीर स्वामीने समवसरणमें बैठे फरमाया था अतएव ऐसे भगवानका स्मर्ण करनसे आत्मा में सद्गुण प्रगटते हैं इसलिये हरएक प्राणीको नमस्कार करना योग्य है:—

ते धन्नाते पुन्ना, तेसु पणामोहविज्ज मोहनिचं;
जेसिं गुणाणुराओ, आकित्तिमो होइ अणवरयं.॥

जिनको हमेशा आकृत्रिम गुणानुराग रहता है उनको धन्य है वे पुन्यवंत है उनको मेरे सदा प्रणामहो गुणानुराग करनेसे धन्यवाद प्राप्त होता है अकृत्रिम गुणानुराग करना घटता है ऊपर २ स्वार्थ या कपट बुद्धिसे कितनेक मनुष्य गुणानुरागका डोल धारण करते हैं और अपना स्वार्थ करते हैं अर्थात् अपवाद प्रकाश करने लगजाते हैं कितनेक पुरुष किसीभी प्रकारकी स्वार्थ बुद्धि विना मार्गानुसारीपनासे गुणोंका राग धारण करते हैं वैसे पुरुषोंको धन्यवाद घटता है जो पुरुष शत्रु होकर पीटने आए पुरुषोंके गुण का राग धारण करते हैं प्राणान्त में शत्रु के भी अवगुण नहीं प्रकाश करते हैं वे सदाकाल नमस्कार करने योग्य हैं जिनके साथ प्रेम होता है उनके गुणोंका रागतो होता ही हैं परन्तु जिनके उपर प्रेम न हो प्रति पक्षी हो उनके गुणका राग होना यह कोई सामान्य वात नहीं है कोई अपनी निंदा करने लग जाते हैं, तव अपन उसके दोषोको प्रकाश करते हैं, उसको चिडाते हैं तथा उसका बुरा करनेमें कुछभी कमी नहीं

है उसके गुणभी अवगुणरूप मालूम होते हैं अतएव इसपरसे यह कहने का है कि, अवगुणी मेंभी कोई गुण होतो उसका राग करना कोई सामान्य गुण नहीं कहलाता है सदाकाल गुणानुराग बराबर धारण करो जहां तहांसे गुण देखनेसे गुण दृष्टि खिलती है और अवगुण दृष्टि का नाश होता है क्योंकि जैसा अभ्यास किया जाता है वैसाही फल होता है:—

जं अब्भसेइ जीवो, गुणंच दोषंच इत्थ जम्मंसि;
तं परलोए पावइ, अब्भासेणं पुणोतेणं ॥

आत्मा इस भवमें गुण और दोष इन दोमेंसे जिसका अभ्यास करता है उसको परलोकमें पाता है यदि इस भवमें सद्गुणोंका विशेष अभ्यास करनेमें आवे तो परभवमें विशेषतः सद्गुण खिल सकते हैं और यदि दोष विशेषतः सेवन करनेमें आवे तो परभवमें दोषही प्रगटते हैं जिस प्रकारके गुणोंका अभ्यास करनेमें आता है उसी प्रकारके गुण प्रगट सकते हैं खियाल करो कि, एक मनुष्य इस भवमें धैर्य और विनय इनदो गुणोंका सेवन करता हो तथा कंजूसाइ दोषको अपने में स्थान देता होतो परभवमें अवतार लेते समय उसके

अन्दर धैर्य और विनय गुण प्रगटते हैं परन्तु कंजुसाइ उसके हृदय में निवास करती है कोई मनुष्य इस भव में दयावंत हो और लोभ दोषका विशेषतः सेवन करता होतो परभव में वह दया देवीको अपने में स्थान देता है परन्तु वह अपना सार्थीतो लोभ नामक राक्षसको ही बनाता है कोई इस भव में परोपकारी विशेषतः होने पर भी मैथुन की अधिक ईच्छा रखता होतो परभव में अवतार पाते समय परोपकार गुण स्वभावसे ही खिलते हैं परन्तु वह कामकी ईच्छा रखनेसे अति कामातुर गिना जाता है इसभव में यदि चारित्र पाळने का विशेष अभ्यास हो चारित्र पर विशेष राग होतो परभव में वह पुरुष चारित्रको प्राप्त करता है किसी मनुष्यको इसभव में वह साधु होनेका विशेष गुणानुराग होतो परभव में वह साधु होनेकी तीव्र ईच्छा धारण करता है और वह साधु हो सकता है यदि इसभव में सम्यकत्व धर्म्म पर विशेष गुणानुराग होतो परभवमें वह सम्यकत्व गुणको विशेषतः प्राप्त करता है यदि इसभव में साधु पर अरुचि होतो परभव में साधु पर धर्षे उत्पन्न होती है यदि इसभव में देवताओंकी प्रतिमा पर द्वेष होतो परभव में प्रतिमाके खंडन करनेकी बुद्धि उत्पन्न होती है इसभवमें

प्रकारके मनुष्यो में भिन्न २ गुण देखने में आते हैं इसका कारण मात्र यही है कि उन्होंने जिन २ गुणोंका अनुराग किया है, इस भवमें उनको प्राप्त किये हैं इसपर से यह सिद्ध होता है कि, भव्यात्माओंको सद्गुणका विशषतः अनुराग करना चाहिये देव, गुरू, धर्म, ज्ञान, दर्शन चारित्र, ध्यानं, समाधि आदि गुणों पर तीव्र गुणानुराग धारण करोकि. जिस से पर भव में वे गुण विशेषतः खिल सके अन्त में सम्पूर्ण खिलने पर परमात्मापद प्राप्त होता है और जिन्होंने परमात्मा पदको पाया है उनके चारित्र तथा गुण हमेशा स्मर्ण करने चाहिये.

सद्गुणानुराग के संबंधी अभी बहुत कुछ आगे कहने का बाकी है परन्तु आज समय बहुत हो गया है इस समझने जैसी बात में ध्यान देनेसे तुम्हारे मगजको परिश्रम हुआ मालूम होता है और जो बात समझनेकी होती है वह बराबर नहीं समझी जाती है इस लिये आज इतनाही बहुत है ठीक तब अपने नित्यके नियम मुआफिक आजकी बातमें से तुम्हारे याद रखनेकी बात कहता जाता हूं " अपने महात्माओंको नमस्कार करना तथा उनके गुणोंका स्मर्ण करना चाहिये जमाने में वैसे पुरुषोंका अभाव है इसलिये उनके

चनो पर चलना तथा हरएक मनुष्य में रहा हुआ एक गुण भी गृहण करना चाहिये.

लो अब जाता हूं बहुत देर हो गई कल होसका तो पुनः आपकी सेवा में हाजीर हूंगा,

चतुर्थ दिन.

एक गुण गृहण.

आज मैं कलकी शेष बात चलाता हूं परन्तु तुमको मेरी बात अच्छी मालूम होती है या क्या ? निरस मालूम हो तब कहना मैं तुमको उसमें रस पडे वैसे प्रयत्न करूंगा मेरे गये पीछे मेरी कही हुई बातोंका पुनः विचार करते हो कि, नहीं. तुमको मेरी कही हुई बातोंमेंसे याद रखने योग्य सारांश याद रहे इस लिये मैं जाते समय कह जाता हूं तुम पूरी बातको याद न रख सको तो सारांशको तो अवश्य याद रखो और उसके सदृश शीघ्र चलनेका प्रयत्न करो कारण कि, नये याद रह जायेगे और अच्छी तरह पाले जायेगे ऐसा मत करना कि, ' ... पालूंगा ! फल पालूंगा ! !' करके उसको ... रखे रहो और पीछे

सको अतएव इसको ध्यानमें रखकर इसके सदृश-पालन करो अब समय व्यतित होता जाता है इस लिये इसको - इहांही रखकर अपन अपने असली वातपर आते हैं.

प्रिय मित्रो ! इस संसारमें बहुत शास्त्रज्ञ, विशारद उग्र तपस्वी दानी देखनेमें आते हैं परन्तु उनमें इर्षादोष विगेरा बहुत देखनेमें आता है शास्त्रज्ञ देखते हैं रखे न कोई पंडित मेरेसे बढ न जाय इस लिये कोई दूसरा उससे बडाभी पंडित आवे तो उसको प्रश्न पूछने लगते हैं उसपर आक्षेप करते हैं और उसकी बुरी तरहसे निंदा करते हैं इसी तरह दानी लोगभी यह खियाल करते हैं रखे न कोई हमारेसे धनमें बढ जाय और हमारे बरोबर या जियादा दान करने लगे इस लिये वेभी किसीको बढने देनेका मौका नहीं देते हैं और विचारे अच्छे आदमियोंकी निंदा करते हैं उनको गिरानेका हमेशा खियाल बांधते हैं परन्तु ज्ञानि महाराजने ऐसा करनेका मना किया है कारण कि, ऐसा करनेसे जीव पापात्मा बनता है.—

जो परदोसे गिण्हइ, संतासंतेवि दुठ्ठ भावेणं;
सो अप्पाणं बंधइ, पावेण निरत्थएणावि ॥

दुष्ट भावसे आत्मा दूसरेके विद्यमानवा नविद्यमान दो- षोंको गृहण करता है वह पापसे अपने आत्माको निरर्थक बंधनमें डालता है दूसरेमें दोष हो तोभी कहनेकी कुछ आव- श्यक्ता नहीं है खियाल करो कि ग नामके पुरुषमें पंच महा व्रतमेंके चार हैं और एक व्रत नहीं है अर्थात् वह व्याभिचारी- है ट नामका पुरुष इस बातको जानता है और नगर भरमें उसकी कम इज्जत करनेके लिये बका करता है इससे वह ट नामका पुरुष कर्मके बंधनमें मवेस करता है परन्तु जरा- भी कर्मको नाश नहीं कर सकता है तब उसने नाहक निंदा करके यह बात सिद्ध की कि, ग नामके पुरुषकी निंदा करनेसे वह निंदक और गिना गया और ग के साथ वैर- भाव धारण किया. ग नामका पुरुष तो दोषीही था इस लिये रस्ते चलते लडाई करनेके सदश वह क्लेशमें मवेस कर राग द्वेषसे लिपट जाता हैं और उसका अधपतन होता है. उसके लिये निंदाके शब्द काम में लाने से वह सुधरता भी नहीं है उलटा बिगडता है सुधारनेका तरीका तो यह है कि, उसके सामने अच्छे २ गुणोंका वर्णन करना चाहिये जब अकेला हो तब बोध देना चाहिये जिससे उसका आत्मा सुधरे

सको अतएव इसको ध्यानमें रखकर इसके सदृश-पालन करो अब समय व्यतित होता जाता है इस लिये इसको इहांही रखकर अपन अपने असली बातपर आते हैं.

प्रिय मित्रो ! इस संसारमें बहुत शास्त्रज्ञ, विशारद उग्र तपस्वी दानी देखनेमें आते हैं परन्तु उनमें इर्षादोष विगेरा बहुत देखनेमें आता है शास्त्रज्ञ देखते हैं रखे न कोई पंडित मेरेसे बढ न जाय इस लिये कोई दूसरा उससे बडाभी पंडित आवे तो उसको प्रश्न पूछने लगते हैं उसपर आक्षेप करते हैं और उसकी बुरी तरहसे निंदा करते हैं इसी तरह दानी लोगभी यह खियाल करते हैं रखे न कोई हमारेसे धनमें बढ जाय और हमारे बरोबर या जियादा दान करने लगे इस लिये वेभी किसीको बढने देनेका मौका नहीं देते हैं और बिचारे अच्छे आदमियोंकी निंदा करते हैं उनको गिरानेका हमेशा खियाल बांधते हैं परन्तु ज्ञानि महाराजने ऐसा करनेका मना किया है कारण कि, ऐसा करनेसे जीव पापात्मा बनता हैं.—

जो परदोसे गिण्हइ, संतासंतेवि दुट्ठ भावेणं;
सो अप्पाणं बंधइ, पावेण निरत्थएणावि ॥

दुष्ट भावसे आत्मा दूसरेके विद्यमानवा नविद्यमान दोषोंको ग्रहण करता है वह पापसे अपने आत्माको निरर्थक बंधनमें डालता है दूसरेमें दोष हो तोभी कहनेकी कुछ आवश्यक्ता नहीं है खियाल करो कि ग नामके पुरुषमें पंच महाव्रतोंमेंके चार हैं और एक व्रत नहीं है अर्थात् वह व्यभिचारी-है ट नामका पुरुष इस बातको जानता है और नगर भरमें उसकी कम इज्जत करनेके लिये बका करता है इससे वह ट नामका पुरुष कर्मके बंधनमें प्रवेस करता है परन्तु जरा-भी कर्मको नाश नहीं कर सकता है तब उसने नाहक निंदा करके यह बात सिद्ध की कि, ग नामके पुरुषकी निंदा करनेसे वह निंदक और गिना गया और ग के साथ वैर-भाव धारण किया. ग नामका पुरुष तो दोषीही था इस लिये रस्ते चलते लडाई करनेके सदृश वह क्लेशमें प्रवेस कर राग द्वेषसे लिपट जाता है और उसका अधपतन होता है. उसके लिये निंदाके शब्द काम में लाने से वह सुधरता भी नहीं है उलटा बिगडता है सुधारनेका तरीका तो यह है कि, उसके सामने अच्छे २ गुणोंका वर्णन करना चाहिये जब अकेला हो तब बोध देना चाहिये जिससे उसका आत्मा

अतएव हरएक स्त्री पुरुषको निंदाकी टेव छोडना चाहिये. निंदक दोषोंको प्रकाशकर खुद पाप कर्मके बंधन में गिरता है और दूसरोंको भी पाप कर्म में सहायक होता है:—

सोऊण गुणुक्करिसं, अन्नस्स करेसि मच्छरं जइवि; तानूणं संसारे, पराहवं सहसि सव्वत्थ.

दूसरोंके गुणोंका उत्कर्ष श्रवण करके यदि तू इर्षा धारण करेगा तो तू सर्वत्र पराजय पायेगा दूसरोंके गुण श्रवणकर क्यों कुदृष्टि करनी चाहिये क्योंकि कुदृष्टि करनेसे उलटे आत्मा में गुण नहीं प्रकट होते हैं कारवोंने पांडवो पर कुदृष्टि करने में कमी नहीं रक्खी परन्तु उनके जैसे गुणोंको वे प्राप्त नहीं करसके. इसी तरह धवल सेठने श्रीपाल राजा पर कुदृष्टि कीथी इससे कुछ धवलसेठको सुख नहीं हुआ उलटा मृत्युको प्राप्त हुआ. महात्माओंके गुणकी तरफ कुदृष्टि करके कौन पुरुष सुखी हुआ है और होगा इर्षालु पुरुष सदा दुसरोंके गुणोंको देखकर जला करता है उसको सुख से निंद्रा नहीं आती है इर्षालु मनुष्य कभी उंचे गुणका धारण करने वाला नहीं बनता है परन्तु वह दुर्गुणोंको अपनेमें स्थान देता है ज्ञानी पुरुषोंका यह वचन है कि दूसरोंके गुणोंको

देखकर खुश होना चाहिये दूसरेमें बिंदु समान गुण हो उसको पर्वत समान गिनकर उसकी स्तुति करो यही इस जगतमें श्रेष्ट पदवीको प्राप्त करानेवाली चिडी है मत्सरी पुरुष अध्यात्म मार्गके लायक नहीं हो सकता है कारण कि, वह बाहरी दृष्टिसे देख सकता है अंतर दृष्टिसे देखते इर्षा दोष नहीं रहता है कारण कि, अंतर आत्मा अपने आत्मा समान दूसरे को गिनता है अंतरात्मा दोष और गुणका यथार्थ निर्णय कर सकता है इससे वह दोषोंके पकडमें नहीं आता है इसलिये इर्षा दोषको नाश करनेका प्रयत्न करो. अधिक इर्षा दोषसे जीवोंने दुःख पाया है पाते हैं और पायेगे इर्षा दोषके सद्भावसे जीव पराजय भूतकालमें पाया सांमत कालमें पाता है और भविष्य कालमे पायेगाः—

जइ विचरसि तव विडलं, पढ्सि सुयंकरिसि विविहकट्ठाइ;
नधरसि गुणायुरायं, परेखुता निप्फलं सयलं. ॥

प्रियमित्रो ! यदि कोइ भारी उग्र तप करे, शास्त्र पढे तथा अनेक प्रकारके कष्ट सहन करे तो भी इन अनेक सद्गुणोंसे वह ऊंच नहीं होने वाला है कारण कि वह राग धारण नहीं ... रे पर गुणानुराग

विद्या और कर्म कष्ट भी नहीं फलते हैं गुणानुराग विना अ-
न्यके तप शक्ति पर इर्षा आती है किसीने श्रुतज्ञान प्राप्त कि-
या हो ताहम भी उस पर राग न करनेसे श्रुतज्ञान आत्मामें नही
प्रगट होता है विविध प्रकारके कष्ट भी गुणानुराग विना कर्मका
नाश नहीं कर सकते हैं जब वसिष्ट ऋषि पर विश्वामित्रका
गुणानुराग प्रगट हुआ तब वसिष्टके सबगुण विश्वामित्र देख
सके. एक तरफ गुणानुराग और दुसरी तरफ बाहरी तप इन
दोनोंको तोले जाये तोभी वह गुणानुरागको नहीं पहुंच सकता है
इसलिये गुणानुराग धारण करना यही हित शिक्षा है:—

किं बहुणा भणिएणं, किंवा तविएण किंवा दाणेणं;
इक्कं गुणाणुरायं, [illegible]

वहुत पढने, उग्र तप [illegible]
होनेका है सर्व गुण [illegible]
गुणानुराग धारण [illegible]
अभ्यास करने [illegible]
जाते हैं वादाय विद्या [illegible]

जहां तांसे दोष ग्रहण करनेका प्रयत्न करता है विना गुणा-
नुरागका विद्वान अपना वडपन और दूसरेका हलकापन
करनेको अनेक प्रकारके डोल करता है विद्वान हो और गु-
णानुरागी हो तो दुधमें सकर मिले बरोवर है गुणानुरागी
विद्वान दृष्टि रागमें नहीं फँसता है और न फंसनेके कारण
वह वीतरागके सर्वोत्तम गुणोको ग्रहण कर सकता है. कारण
कि, उसको मेरा यह अच्छा नहीं लगता है परन्तु उसको जो
अच्छा है वह मेरा भान होता है गुणानुरागी विद्वान वीत-
रागके वचन सत्य मान सकता है और उसका आदर करता
है तथा उनके कहेहुए आगमोके अद्‌भुत रहस्यको जानना चाहता
है वहुत तपश्चर्या करनेवालाभी गुणानुराग विना एक दुसरेके
गुण नहीं जान सकता है क्रोधादि अग्निमें संतप्त रहता है
तपका अजीरण क्रोध इस कहावतकी सिद्धि गुणानुराग विना
होती है. यदि गुणानुरागका फल प्रगटता है तो तपश्चर्याका
फल होता है, क्रोधकी शांति होती है सद्‌गुणकी रुचि धारण
करनेवाला खुद सुखी होता है तपश्चर्याकी अनेक लब्धि प्राप्त
होते हुए भी दुसरेके गुण देखनेसे किसीको श्राप नहीं दिया
जासकता है उलटा गुणानुरागसे तपश्चर्याका गुण खिलता है.

गुणानुराग विना अन्य सद्गुण दानसे भी नहीं प्राप्त होते हैं गुणानुरागी दानेश्वरी लघुताको धारण करता है इर्षादि दोषोंका वह नाश कर सकता है जगतमें दानको देताहूआ भी दानी मनमें घमंड नहीं करता है गुणानुरागसे दान प्रति दिन वृद्धिको प्राप्त होता है इसलिये गुणानुरागकी अत्यन्त आवश्यक्ता है.

आज देर अधिक होगई है सो शेष बात कल कहूंगा परन्तु आज मैंने जो कुछ कहा है उसमेंसे क्या सारांश ग्रहण किया और जो कुछ कहा है उसको अच्छी तरहसे याद रखना. लो इसका सारांश मैंही कहता जाता हूं दान देने या बहुत पढनेसे कुछ नहीं होगा जहांतक कि, तुम गुणानुराग धारण न करो अतएव मेरे कहनेका तातर्पिय यही है कि, वीतराग वचन रूप गुणानुरागको धारण करो जो सर्व सुखका दाता है.

पंचम दिन.

एक महत्वका लक्षण तथा महात्माओं की निंदा त्याग.

प्रिय मित्रो ! कल मैं यहांसे जाकर अपने रीडिंगरूममें गया और एकान्तमें अपने आपसमें हुई बातपर खियाल करने लगा. तवतो गुणानुराग संबंधी अधिक अगत्य बातें तुमको कहने जैसी मालूम हुई और इतनी बातें कहने लगूं तो दिनके दिन निष्फल जाएंगे और तुमको सुननेकी भी रुचि नहीं होगी अतएव एक साथ न कहते प्रसङ्गो पर कहता रहूंगा. यह बात तो निर्विवाद सिद्ध है कि, अपना गुण स्वीकार करना यह एक महत्वका लक्षण है परन्तु जिन्हें मानसिक बल नहीं है वेही अपना दोष स्वीकारने में थरथराते हैं वे यह नहीं सोचते कि, अपराध स्वीकार करना, हृदयकी दुर्बलता न होकर, हृदयका महत्त्व है. अपना दोष प्रगट कर देनेसे ही मनुष्य निर्दोष होता है और उसके मनमें शांति प्राप्त होती है चरित्र निर्मल होता है और अपयशके बदले सुयश प्राप्त होता है अनुचित कर्म करके दोष स्वीकार करना भले आदमियोका काम है जो लोग दोष छिपाते हैं उन्हें चोर समझने

चाहिये जो अपना दोष छिपानेकी जितनी ही चेष्टा करता है उतना ही वह अपनेको और दोषी बनाता है अपने दोषोंको छिपाकर कोई महात्मा नहीं कहला सकता महात्मा तबही कहला सकता है जब वह अपने दोषोंको साफ २ प्रगट करदे और अपने किये हुए दोषोपर पश्चाताप करे. दोष स्वीकार करना महत्वका लक्षण है गुणीजनोका बिन्दु समान भी दोष नहीं देखना चाहियेः—

गुणवंताण नराणं, ईसाभर तिमिरपुरियो भणसि
जइ कहवि दोषलेसं, ताभमसि भवे अपारंमि.

हे आत्मा ! यदि तु गुणीजनोका जराभी दोष इर्षासे कहेगा तो सर्वथा इस असार संसारमें परिभ्रमण करेगा इर्षासे अन्ध बनेहूए पुरुष चिमगादडकी नाइ जहां तहां सद्‌गुण रूप सूर्यको देखे विना परिभ्रमण करते हैं सज्जन पुरुषोंके अन्दर सरसव जितना दोष होतो मेरु पर्वत जितना कह बताते है और इर्षालू अविद्यमान दोष भी गुणीजनो पर लगाते नहीं अचकाते हैं गुणी पुरुषोंके गुण देखनेको इर्षालुओंकी सद्‌गुण दृष्टि बंद हो जाती है धतुर लक्षकी नाइ वे गुणोंकोभी विपरित तौरसे देखाकरते है इर्षालु किसीकी प्रसं-

शा. सुनते समय उस पर लक्ष न रखते उन पुरुषोंके अन्दर क्या अवगुण हैं उसको ही देखनेका ध्यान रखते हैं समकीति जीव दुसरेके सद्गुण देखनेमें ही दृष्टी रखता है जिस तरह कौआ चांदको देखता है वैसेही इर्षालु लोग दुसरोंके अवगुण देखते हैं इर्षावलसे अंध बनाहुआ पुरुष अनेक अवगुणोंको धारण करताहुआ तथा अष्ट कर्मोकी वर्गणाको ग्रहण करता हूआ चोरासी लाख जीव योनियोमें परिभ्रमण करता हैः—

जो जंपइ परदोसे, गुणसयभारिओवि मच्छर भरेणं;
सो विउसाण मसारो, पलाल पुंजव्व पडिभाइ. ।

सेकडो गुणोंसे परिपूर्णभी कोई मनुष्य इर्षामें आकर दुसरोंके दोषको प्रकाश करे तो वह इतना वडा उच्च होने पर भी पंडित गुणी पुरुषोंमें असार पलाल पुञ्जकी नाइ शोभा पाता है.

इस परसे यह सिद्ध होता है कि, दूसरोंके अन्दर होते या न होते दोषोंका प्रकाश करनेसे हलका पन प्राप्त होता है परन्तु कुछ आत्मलाभ नहीं होता है ज्ञानी पुरुष कहते हैं " खुद लक्ष गुणोंसे परिपूर्ण होने परभी दूसरोंके दोष प्रकाश करनेको आदत नहीं ै तो वह सर्पके मस्तक ...

है पलाल पुंजके नाइ असार लगता है मनुष्यके सब अङ्ग सुन्दर होनेपर भी नाक खराब हो तो वह उसके रूपको बिगाड देता है इसी तरह चाहे जैसा ज्ञानी हो, मतिभ्रिन हो तो वहभी दूसरों की निंदा करनेसे अपने ज्ञानको नाश किया हुआ मालूम होता है (या अपने ज्ञानमें धब्बा लगाने वाला कहलाता है) वह ऐसा मानता है कि, मैं अच्छा करताहूं परन्तु इससे वह खुदका तथा दूसरेका अहित करता है कारण कि, अवगुण प्रकाश करनेसे स्वयम् खुदका प्रत्यक्ष अहित होता है और अन्य पुरुष उसकी कही हुई बात सुनकर अरुचिवान होते हैं इससे वे गुणको भी नहीं ले सकते हैं एक सरोवरमें गया हुआ भैंसा, सारे पानीको गंदा करदेता है इससे खुदभी निर्मल जल नहीं पीता है तथा दूसरे पशुओंको पानी पीनेमें विघ्न करता है अतएव भैंसा पागल गिना जाता है. अ नामके मनुष्यमें पचीस गुणों तरफ नहीं देखता है और एक दोषको देख कर जहां तहां निंदा करता फिरता है इससे परिणाम यह निकलता है कि, वह अ के साथ वैरका जोर बांधता है अ का दोष दूर नहीं करसकता है, पचीस गुण नहीं ले सकता है और अन्य पुरुषोंको पचीस गुण लेनेमें विघ्नडालता है अतऐव वह विघ्न संतोपी गिना जाता है क

का वारम्वार यही विचार रहता है कि, कभी कोई अ-का रागी बन न जाय ? इस लिये वह एक दोषको खुला करता है परन्तु अ के पच्चीस गुणोंसे सब मनुष्य एक दोष होनेपर आकर्षीय इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है क की धारी हुई मंशा निष्फल जाती है और लोगोंमें वह निंदक गिना और जाता है इस परसे यह सिद्ध होता है कि, गुणी पुरुष अन्यके अवगुण प्र-काश करने पर खराब मालूम होता है तो दुर्गुणीका तो क्या कहना ? उसको सभ्य लोग समझ सकते हैं.

प्रिय मित्रो ! आज अब अधिक वात चित करनेका स-मय नहीं है तुम इन सब वातों पर घरमें विचार करना. पर-न्तु वातका सारांश क्या गृहण किया वह याद है या क्या ? लो अब समय होगया है सो मैं ही शीघ्रतासे कहता जाताहूं हमेशा अपने दोषोंको स्वीकार करो कारण कि यह महत्व का लक्षण है किसीके बिन्दु समान गुणोंको भी निंदाके रूपमें मत प्रकाश करो. कारण कि, हरएक मनुष्य पंडित वा विद्वान होने पर भी सब गुण अपनेमें नहीं रखता है अतएव अवगु-णोंको छोडकर शेष उनमें रहेहुए गुणोंको गृहण करो.

लो अब जाता हूं पुनः कल मिलूंगा.

षष्टम् दिन.

कषाय अग्निके हेतुओंका त्याग.

प्रियमित्रो ! हरएक मनुष्यके लिये उन २ वस्तुओंके त्याग करनेकी अगत्यतां है जो इस संसारके अन्दर कषाय रूप अग्निको प्रकाश करती है:-

तं नियमा मुत्तव्वं, जत्तो उपज्जए कसायग्गी;
तं वत्थुं धारिज्जा, जेणोवसमो कासायाणं ।

जिससे कषाय रूप अग्नि उत्पन्न हो वैसे कार्योंको अवश्य त्याग करना चाहिये और जिससे कषाय दब जाए वैसा कार्य करना चाहिये क्रोध, मान, माया, लोभ, इर्ष्या, काम इत्यादि कषायोंका उत्पात करनेवाले हेतुओंका त्याग करो खुदको कषाय उत्पन्न हो और परजीवोंको कषाय करानेवाली निंदा इत्यादि दोषोंका त्याग करो गुणानुरागसे कषाय टलते हैं अर्थात् उनका प्रशस्यपनामें रुपान्तर होता है इसलिये जिन २ हेतुओंसे कषाय टले उन २ हेतुओंको गृहण करो. समताके गृहण करनेसे कषायका नाश होता है राग और द्वेषमें नहीं प्रवेश करने वाली दशाको समता कहते हैं यह दशा ऊंच

है और इसके पहिले गुणानुरागकी दशा है गुणानुरागसे निंदादि अनेक नाशत्वको प्राप्त होते हैं इससे कषाय भी मंद हो जाते हैं ज्ञानी पुरुष कहते हैं " गुणानुराग धारण करनेसे कषाय किस तरह शान्त हो ? यह बात गुणानुरागी होनेपर तुम्हारे अनुभवमें आएगी. कषाय अग्निको क्षमारूपी जलसे शान्त करो. अन्यके अवगुण न प्रकाश करनेसे किसीको भी अपने निमित्तसे कषाय रूप अग्नि नहीं उत्पन्न होती है गुणानुरागका यह फल है:–

जइ इच्छइ गुरुपत्तं, तिहुयण मज्झंमि अप्पणे नियमा;
ता सव्वपयत्तेणं परदोसविवज्जणं कुणह. ।

हे मित्रो ! यदि तीनभूवनमें तुम्हारे परमात्मा जैसे गुरू पदको पानेकी ईच्छा हो तो सर्व प्रकारके उद्यमसे दुसरोंके दोषोंको देखना तथा प्रकाश करना छोडदो. दूसरोंके दोष देखने तथा प्रकाश करनेकी जहांतक तुमको ईच्छा है तहांतक तुमको मार्गानुसारीके लक्षण भी नहीं प्राप्त होगे तो सम्यकत्वकी तो क्या बात ? सम्यकत्वंत आत्मा अपने दोषोंको देखता है और उनके नाश करनेका प्रयत्न करता है लाखो करोडो उपाय ... दूसरोंके दोष प्रकाश करनेकी

त्याग करो. दूसरोंके दोष प्रकाश करनेकी टेवको पवित्र आत्मासे हटाये विना कोई उत्तम नहीं होसकता है पुरुषके धर्मोतरफ देखनेसे यह विदित होता है कि, दूसरोंके दोष प्रकाश करना यह पुरुषोंको घटित नहीं है इसलिये प्राणान्तमें भी दूसरोंके दोष मत प्रकाश करो.

प्रिय मित्रो ! आजकी बातका तुमने क्या सारांस गृहण किया कि मैंने बोला और तुमने कानोंसे निकाल दिया नहीं २ यह नहीं होसकता है आज मैं तुम्हारी रुचिको इस तरफ झुकी हुई देखता था इससे पाया जाता है कि, तुमने इस बातको अच्छी तरह सुनी है मगर सुननेसे कुछ नहीं होता है परन्तु उस बरोबर चलनेसे सर्व कार्य सिद्ध होते हैं अतएव मुझे आशा है कि, तुम मेरे कहने बरोबर चलकर सर्वोत्तमके लक्षण गृहण करोगे ठीक लो अब आजकी बातका सारांश कहता जाता हूं.

काम, क्रोध, मोह, माया, लोभ, इर्ष्या, और कामादि कषायोंसे कषाय अग्नि उत्पन्न होती है निंदा करनेसे खुदको निंदक तथा जिसकी निंदा की जाय उसको अधम गिनना नीचका लक्षण है. कारण कि अष्ट कर्म अर्थात् अवगुण ये

किसको नहीं लगे हैं जिनको अष्ट कर्म लगे है वे अवगुणी हैं तव अवगुण देखने व मकाश करने वालेको भी अष्ट कर्म लगे हैं तव वह स्वयम् अवगुणी ठहरता है अवगुण देखता तथा मकाश करता है इससे कुछ आत्मकल्याण नहीं होता है इस लिये भगवानको नमस्कार करके भगवानने जिस तरह पूर्व-भवमें गुणानुराग धारण किया था वैसा गुणानुराग धारण करो.

लो अव जाता हूं.



सप्तम् दिन

निंदाका त्याग.

मिय मित्रो ! आजमें कलकी शेपरही हुई निंदात्याग की वात कहने वाला हूं जिसको तुम अवश्य ध्यान देकर सुनोगे. निंदा करना वहुत अधमाधमका काम है अतएव ज्ञानी महाराज कहते हैं " अधिक कर्मी जीवोंकी निंदा करना अपने आपको एक नीच वनाना है तव दूसरोंकी कैसे की जाय? उन पुरुषोंके भेद द्वारा वताते हैं:—

चउहा पसंसणिज्जा, पुरिसा सव्वुत्तमुत्तमा लोए,
उत्तम उत्तम उत्तम, मज्झिम भावाय सवेसिं;
जे अहम अहम अहमा, गुरुकम्मा धम्म वज्जिया पुरिसा
ते विय न निंदणिज्जा, किंतु दया तेसु कायवा.

चार प्रकारके मनुष्य प्रशंसा करने योग्य हैं सर्वोत्तमोत्तम उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम. इन चार भेदवाले मनुष्योंकी तो सदा स्तुती करो उनके गुणोंका अनुकरण करनेका उद्यम करो तथा उनके गुणोंमें चित वृति लगाओ चार प्रकारके पुरुषोंका ध्यान धरते आत्मा उच्च होता है और नीच दोषोंसे विमुक्त होता है अधम और अधमाधम ये दो तो धर्महीन और अधिक कर्मी जीव होते हैं इन अधिक कर्मी जीवोंकी भी निंदा मत करो परन्तु उन पर करुणा बुद्धि धारण करो.

अधम और अधमाधम जीवोंका आचरण खराब होता है उनकी संगत हित करने वाली नहीं होती है तभी उनकी निंदा मत करो. इनके उत्तरमें यह कहनेका है कि, तीनों कालमें खराब आचरण करनेसे कोई नहीं सुधरता है और नहीं सुधरेगा. डाक्टर और वैद्य लोग यदि ऐसा विचार करे कि,

अपने रोगियोंकी निंदा करे जिससे फिर रोगरूपी राक्षस के चरणमें पुनः नहीं जाना पडे. क्या ऐसा करनेसे रोगी रोगसे मुक्त होजाएंगे? नहीं कभी नहीं उलटी रोगियोकी संख्याकी वृद्धि होगी इस तरह मनुष्य यह विचार करते हैं कि, दोपियोंकी निंदा अपन जग जाहिर करेंगे तो दोपीलोग दोपर हित हो जाएंगे परन्तु ऐसा करनेसे दोप रहित नहीं होते. जैसा हम ऊपर डाक्टरोंके वारेमें कह आए हैं डाक्टरों तथा वैद्योंका यह फर्ज है कि, रोग तथा रोगके हेतुओंको रोककर रोगियोंकी प्रेम भावसे सेवा करना चाहिये रोगियोंको आश्वास देकर चाहे जैसे उनको निरोग करनेका प्रयत्न करना चाहिये. डाक्टरोंमें रोग मिटानेकी शक्ति होगी तो रोगी शीघ्र उनके गुण गातेहुए आएगे और अपना सब हाल कहेंगे दवा करायेंगे पथ्य पालेंगे और अन्तमें निरोगी होंगें इसी तरह दोपी लोग जानते हैं कि, हम दोपी हैं परन्तु जो उनकी निंदा करते हैं उनके पास तो वे नहीं जाते हैं उलटा उनका भी बुरा करनेका वे यत्न करते हैं चमारका चुनेवाला मुनि भी अशुद्ध होता है इसीतरह दोप जाहिर करने वाला भी उक्त दोपोंके प्रसङ्गमें [illegible] आजाता है. निंदा करने [illegible]

लिये यह बात गौर तलब है कि, अन्यके निंदारूपी कषायको अपनेमें स्थान देनेसे अपन स्वयम् नीचताको प्राप्त होंगे. जब-के दोषियोको निर्दोष नहीं कर सकेंगे अपनेमें जो निंदारूप कषाय हैं उनको दूर करो और किसीकी प्राणान्तमें भी निंदा मतकरो. इस निंदारूपी कषायको छोडकर उत्कृष्ट द-शामें रहेगे तो दोषी लोग भी तुम्हारा वर्तन शुद्ध प्रेम वाला देखकर तुम्हारे पास आएंगे यद्यपि तुम उपदेश न दो तोभी अपना वर्तन सुधारनेका प्रयत्न करेंगे और उसके उपाय तुम से पूंछेंगे वे अपने सब दोषोंका वर्णन तुम्हारे सामने करेंगे और मुक्त होंगे. कारण कि गंगाजलको मलिन जलकी निंदा नहीं करनी चाहिये परन्तु जब मलिन जल अपनेको गंगाज-लमें मिलायेगा तब मलिन जलभी निर्मल होजायगा. किसीके दोषकी भी न निंदा करने वाले वीतरागादि उत्तम पुरुष हैं उनकी संगतसे हजारो जीव दोषसे मुक्त होते हैं दोष प्रकाश करने वालोंके लिये यह नसिहत है कि, तुम तीर्थङ्कर महा राज जैसी योग्यताको प्राप्तकरो तो शीघ्रही हजारों लाखो दोषियोको तुम निर्दोष बना सकोगे परन्तु हे निंदको ! तुम अपनेमें रहेहुए मेरुपर्वत जैसे बडे दोषोंको नहीं देखते हो कि-

सीके सामने प्रकाश नहीं करते हो जाने किसीको मालूम होगा तो प्राण जायेगा इस प्रकारके विचार वारम्वार करते हो, और दूसरोंके दोप देखने तथा प्रकाश करने लग जाते हो विचार करो ! यह तुम्हारी कैसी अधमता ? योग्यताको प्राप्त करो, गंभिर स्वभावको धारण करो. अधम और अधमाधम मनुष्योंकी निंदा करनेका विचार छोड दोः—

पासथ्थाइसु अहुणा, संजमसिढिलेसु मुक्कजोगेसु;
नोगरिहा कायव्वा, नेव पंससासहामज्जे.

वर्त्तमान समयमें चारित्र योगसे शिथिला चारियोंकी भी सभामें निंदा वा प्रशंसा करना योग्य नहीं है तात्पर्यार्थ यह है कि, उनके सम्बन्धमें मध्यस्थ भाव धारण करना चाहिये जिन्होंने पूरे दिलसे चारित्र लिया हो परन्तु कर्मके उदयसे चारित्रसे पीछे हटकर पंच हमाव्रतमें दोप लगाये हो ब्रह्मचर्यका भङ्ग, झूठका बोलना, आत्म समाधिमें न रहना तथा राग द्वेषादिको अपनेमें स्थान दिया हो उनकी भी उत्तमत चारित्र धारण हार तथा पंडित नाम धारियोंको प्राणान्तमें निंदा नहीं करना चाहिये चारित्रमें ऊंच तथा नीच परि

णाम अधिक वार हुआ करते हैं जो चढता है वही गिरता है और जो गिरता है वहही चढता है कितनेक साधुओंका व्रत पालनेको असमर्थ होनेकी वजहसे साधु नहीं होते हैं परन्तु कोई साधु होनेवाला हो उसको रोकते हैं और साधुओंके दोष मनमें आवे वैसे प्रकाश करने लगजाते हैं जब कोई साधु उनको उपालम्भ देता है तो जवाबमें कहते हैं हमारे क्या है हम चारित्रसे अलग हैं हम वेश्याके घरभी जाते हैं तुमने शिर मुडाया है अतएव तुमको निंदूंगा. तब साधु महाराज कहते हैं "हे श्रावक नामधारी तुमको श्रावकके गुण बराबर वर्तन करने चाहियें श्रावकके इकीस गुणोंमेंसे वारह व्रतोंमेंसे तुम्हारेमें कितने हैं तथा कितने दोष हैं ? उसका विचार करते हो या नही ? श्रावक कहता है सुफेद कपडे पर दाग होता है मेरे उनमेंका कुछ नहीं है इस पर साधु महाराज कहते हैं कि, तुमको मुझे कहनेका कुछ अधिकार नहीं है तुमको कौन कहने आया है जब तेरे घर आवे तब मत वोहरना. कहा तुम्हारे हमारे क्या सम्बन्ध है जाओ तुम्हारा हो सो करलो अब हमारे कौनसी लकडी देनी लेनी है देवगुरुकी निंदा करनेसे सातवां नरक रूपी नगरीमें जाना पडता है

और कुलका क्षय होजाता है. अतएव अनुभवी लोगोंको जानना चाहिये कि इस तरह निंदा करनेसे चरचा उत्पन्न होती है शिथिल साधुओंको भी एकान्तमें समझा कर उनकी निंदाके बजाय उनको उनकी असली हालतमें लानेका प्रयत्न करना चाहिये. अपने लुले लङ्गे पशु पक्षियोंको पांजरा पोलमें रखकर उनका हित करते हैं तो उनसे उत्तम इन शिथिलाचारियोंकी निंदा वा प्रशंसा करना योग्य नहीं है उनके ऊपर मध्यस्थ भाव धारण करना योग्य है अतएव हरएक मनुष्यको किसीकी भी निंदा नहीं करना चाहिये बल्कि उनको अच्छा रास्ता बताना चाहियेः—

काउण तेसु करुणं, जइ मन्नइतो पयासए मग्गं;
अह रुसइ तो नियमा, न तेसि दोसं पयासेइ.।

पासत्थादिक पर करुणा करके, यदि वे माने यह बात तुमको मालूम हो, सत्यमार्ग प्रकाश करोः वे गुस्सा करे यह बात मालूम हो तो गुणानुरागी लोगोंको उनके दोष नहीं प्रकाश करना. महात्माओंका यह कथन है कि,

पब्लिक उपदेशकी बनिसबत पोशिदा उपदेशसे दोषी लोग विशेषतः सुधरते हैं बिलकुल छोटेसे मामलोंमें जहां दोषियोंके दोष जराभी प्रकाश होनेका संभव हो वैसे मामलोंको छोडना अथवा दूसरे पेलु पर लेजाकर सुधारना अच्छा है यदि अपन ऐसा न करेंगे तो दोषी अपनी इज्जतके खातिर उलटा मारने दोडेगा अलावा इसके दोषोंका प्रकाश करनेसे हृदय की शांति नहीं होगी दोषोंका नहीं प्रकाश करना यही हृदय शान्तिका मुख्य कारण है, अन्तमें अपनेमें उत्तम गुण तथा मध्यस्थ दृष्टि देखकर उनपर कुछ असर अवश्यमेव होगा यह जगत् दोषमय है दोषोंको देखनेमें पार नहीं आयेगा जहां तहां दोषोंको प्रकाश करने वाला करोडो मनुष्य मेंसे एकभी मनुष्यको निर्दोष नहीं करसकता है और जो प्राणान्त मेंभी हर किसीके विद्यमान दोषोंको नहीं प्रकाश करता है तथा उलटा गुणानुराग धारण करता है वैसा एक भी मनुष्य प्रकाश किये विना करोडो मनुष्यो पर अपने गुणोंका असर कराके उनको दोषोंसे मुक्त करता है अहो ! यह कितना बडा ार ! किसी छोटे बालकके मुंह पर काला दाग पडा हो दागको देखकर कोई उसे कहे कि, अरे बालक तेरे

मुंहपर काला दाग है यह सुनकर वह बहुत गुस्सेमें आकर कहता है " तेरा मुंह काला है " बालक कोभी अच्छी नसीहत खराब लगती है और उलटा दोष देने लगता है यदि उस लडकेको दर्पण दिया जायतो वह अपने आप उस खराब दागको साफ करेगा यह दृष्टान्त बराबर मनन करने योग्य है मनुष्योंके दोष निकालनेके लिये कभी उनके दोष प्रकाश कर उपदेश नहीं देना चाहिये परन्तु हे मित्रो ! दर्पणकी नाई सत्समागम, ज्ञानोपदेश, आत्मज्ञानादिका उपदेश दो.

प्रिय मित्रो ! आजकी बात जो विस्तार पूर्वक थी उसका सारांश अच्छी तरहसे ग्रहण किया है या क्या ? यदि किया है तो कहो. नहीं २ तुमने अभी इस विषयमें एकान्तमें विचार नहीं किया है इस लिये कहनेमें तुमको बहुत तकलिफ मालूम होगी इस लिये मैं ही कहता हूं किसीभी मनुष्यकी निंदा मत करो. यह, जो कहता है तथा जिसकी की जाती है दोनोंको नीचदशामें पहुंचाता है अतएव चाहे जैसा खराब मनुष्य हो तो भी उसकी निंदा मतकरो परन्तु उसको अच्छा मार्ग बताओ.

अष्टम् दिन.

दूसरे गच्छ वा फिरकेके मुनियोंकी निंदा त्याग.

प्रिय मित्रो ! पंचमकालमें ज्ञानरूपी चक्षुसे अंध प्राणी दूसरे गच्छके मुनिराजोंकी निंदा करते हैं और उस मुनिके आचार देखे विना सिरप गच्छके ममत्वसे उस पर कई प्रकारके आक्षेप करते हैं तथा उसको बदनाम करने व उसके गच्छको झुठा ठहरानेका पूरा जाल रचते हैं और जाल रचते समय यह नहीं खियाल करते हैं कि, अच्छा कररहे हैं याकि, बुरा परन्तु उनको तो अपने गच्छकी ही तारीफ कराना प्रिय है इस लिये वे गुणानुरागको छोडकर ऐसा करते हैं परन्तु हे मित्रो ! यदि तुम्हें अपनी गिनती उत्तम प्राणियोंमें करना ही प्रिय है तो निम्न लिखित श्लोकको जरा देखो, उसपर विचार करो तथा महात्माओंके वचनोपर आधार रखकर उसके सदृश वर्तन करो.

जउं परगच्छि सगच्छे, संविग्गाबहुस्सुया मुणिणो
तेसिं गुणाणुरायं, मा मुंचसु मच्छरप्पहओ.

हे आत्मा ! दूसरे वा अपने गच्छमें जो संविग्न और मुनिराज हो तो उन पर ममत्वमें आकर गुणानुराग

मंत छोड प्रायः कितने गच्छकी प्रशंसा करते हैं और परग-च्छके विद्वान वा मूर्ख सर्व साधुओंके विद्यमान तथा न विद्य-मान दोषको प्रकाश करने लगजाते हैं वाज समय तो इर्षासे कितनेक विद्वान साधुओंको देखकर, अन्य विद्वान यदि अन्य गच्छ वा संघाडेके हो, उनको मूलमेंसे गिरानेके लिये कई प्रकारके जाल करते हैं चाहे जिस प्रकार उनको श्रावकोंके नजदीक वे हलका करनेमें न्युनता नहीं रखते हैं शास्त्रके पाठभी कुयुक्तिसे उनके सामने रखकर सामने वाले साधुओंको हलका पाडनेके लिये श्रावकोंके नजदीक आडा अवला समझाकर उशकेरणी करते हैं तब अन्य गच्छके कि, जिनकी समाचारी भिन्न है वेभी उनसे कम नहीं है अर्थात् वे भी सामने वाले साधुओंके क्रिया, आचार, तथा उनके दोष अपने पक्ष भक्तोंके सामने प्रकाश करनेमें कमर कसकर उद्यम करते हैं आमने सामने खंडन मंडन छपवानेमें आता है श्रावकभी आमने सामने खंडन मंडन करते हैं साधुओंके पक्ष-को पकडते हैं मेरा यह अच्छा यों करने लगजाते हैं व्याख्या-नमेंभी चाहे जिस तरह निंदा की जाती है त गच्छवाले साधु कहते हैं ' ख गच्छ वाले बिलकुल भ्रष्टाचारी है, उनका संग

करने वाले हैं अमुकके साथ अमुक तरहसे वर्तन करते थे' तब ख गच्छ वाले त गच्छकी निंदा करनेमें कुछ कमी नहीं रखते हैं अमुक साधुकी कोई स्तुति करतो सामने वाला दुधमेंसे झाककी नाई एक दो दोषतो निकालेहीगा.अमुक साधुकी कोई विद्वताकी प्रशंसा करे तो सामने वाला साधु उसका खंडन अवश्यमेव ही करेगा अमुक साधु परोपकारके लिये पुस्तके रचे तो सामने पक्षवाले निंदा किये बिना नहीं रहेंगे अपने रागी वा अपने गच्छके श्रावक करनेके लिये रात दिन श्रावकोंको मीठे वचन कहते हैं कोई दूसरे गच्छके साधुओं पास जावे तो उसकी तरफ बिलकुल ही नहीं देखते हैं एक गलीका श्वान दुसरे गलीके श्वानको मिलनेसे जैसी अवस्था होती है ठीक वैसी ही होती है इस तरह वर्त्तमान समयमें लोग गच्छों की दशाका विचार करते हैं. यदि इसमेंसे बहुतसी बातें सची हो तो पुरे बुरा गुणानुराग को देशवटा दिया गया समझना चाहिये.

साधुओंके गच्छकी यह दशा देखकर कितनेक नया पंथ निकालते हैं और साधुओंके परस्पर कुसम्प की वृद्धि होने से वैसे पंथ चल सकते हैं और जैन सनातन धम्मका नाश हो " गच्छके आचार्य तथा साधुओंका दोष है.

संप्रतिकालमें प्रायः गुणानुरागके बजाय दो दृष्टि बढी हैं श्रावकों मेंभी प्राय वैसी ही दशा देखनेमें आती है नये पंथ निकालने वालेभी प्राचीन पंथोंकी निंदा करते हैं साधु और साध्वियोंको निंदते हैं और आडा अवला समझाते हैं परन्तु गुणानुरागकी दृष्टि विशेषतः देखनेमें नहीं आती है नये पंथवाले सनातन पंथवालोंके हरएक कृत्य मूलमेंसे निकालनेका प्रयत्न करते हैं इतनाही नहीं परन्तु नये पंथके रागसे अनेक पाखंड करके मत बढाते हैं साधुओं तथा श्रावकोंको परस्पर गच्छोंके विद्वान साधुओं पर गुणानुराग धारण करना चाहिये. पर गच्छके विद्वानोंकी किसीके आगे निंदा मत करो वे बुरा काम करे तो भी उनके विद्यमान तथा न विद्यमान दोषोंका प्रकाश मत करो पर गच्छके साथभी विशाल दृष्टि रखकर भ्रातृभाव धारण करो अपने गच्छके विद्वान साधुकी भी प्राणान्तमें निंदा मत करो श्रावकोंको भी भिन्न २ गच्छ वालों पर गुणानुराग धारण करना चाहिये यदि गुणानुराग धारण नहीं करनेमें आवे तो साधुमार्ग वा गच्छका नाश होगा इसमें कुछ संशय नहीं है कारण कि, निंदकोंकी तथा उनके धर्मकी नीव दृढहुए बिना नहीं रहती अपने गच्छके विद्वान तथा

करने वाले हैं अमुकके साथ अमुक तरहसे वर्तन करते थे' तब ख गच्छ वाले त गच्छकी निंदा करनेमें कुछ कमी नहीं रखते हैं अमुक साधुकी कोई स्तुति करेतो सामने वाला दुधमेंसे झाककी नाई एक दो दोष तो निकालेहीगा.अमुक साधुकी कोई विद्वताकी प्रशंसा करे तो सामने वाला साधु उसका खंडन अवश्यमेव ही करेगा अमुक साधु परोपकारके लिये पुस्तके रचे तो सामने पक्षवाले निंदा किये विना नहीं रहेंगे अपने रागी वा अपने गच्छके श्रावक करनेके लिये रात दिन श्रावकोको मीठे वचन कहते हैं कोई दूसरे गच्छके साधुओं पास जावे तो उसकी तरफ बिलकुल ही नहीं देखते हैं एक गलीका श्वान दुसरे गलीके श्वानको मिलनेसे जैसी अवस्था होती है ठीक वैसी ही होती है इस तरह वर्त्तमान समयमें लोग गरुओं की दशाका वियान करते हैं. यदि इसमेंसे बहुतसी वातें सची हो तो पुरे पुरा गुणानुराग को देशवटा दिया गया समझना चाहिये.

साधुओंके गच्छकी यह दशा देखकर कितनेक नया पंथ निकालते हैं और साधुओंके परस्पर कुसम्प की वृद्धि होने से वैसे पंथ चल सकते हैं और जैन सनातन धम्मका नाश हो इसमें गच्छके आचार्य तथा साधुओंका दोष है.

संप्रतिकालमें प्रायः गुणानुरागके बजाय दो दृष्टि बढ़ी है श्रावको मेंभी प्राय वैसी ही दशा देखनेमें आती है नये पंथ निकालने वालेभी प्राचीन पंथोंकी निंदा करते हैं साधु और साधवियोंको निंदते हैं और आडा अवला समझाते हैं परन्तु गुणानुरागकी दृष्टि विशेषतः देखनेमें नहीं आती है नये पंथवाले सनातन पंथवालोंके हरएक कृत्य मूलमेंसे निकालनेका प्रयत्न करते हैं इतनाही नहीं परन्तु नये पंथके रागसे अनेक पाखंड करके मत बढाते हैं साधुओं तथा श्रावकोंको परस्पर गच्छोंके विद्वान साधुओं पर गुणानुराग धारण करना चाहिये. पर गच्छके विद्वानोंकी किसीके आगे निंदा मत करो वे बुरा काम करे तो भी उनके विद्यमान तथा न विद्यमान दोषोंका प्रकाश मत करो पर गच्छके साथभी विशाल दृष्टि रखकर भ्रातृभाव धारण करो अपने गच्छके विद्वान साधुकी भी प्राणान्तमें निंदा मत करो श्रावकोंको भी भिन्न २ गच्छ वालों पर गुणानुराग धारण करना चाहिये यदि गुणानुराग धारण नहीं करनेमें आवे तो साधुमार्ग वा गच्छका नाश.

कुछ [illegible] ारण कि, निंदकोकी

नीच [illegible] हीं रहती अपने

मूर्ख साधुके भी विद्यमान तथा न विद्यमान दोषोंकी निंदा मत करो इतनाज नहीं परन्तु संसारके हरएक मनुष्यको साधु की निंदा करना योग्य नहीं है. स्वदर्शनी हो या परदर्शनी हो तो भी उसके विद्यमान तथा न विद्यमान दोषोंका प्रकाश मत करो.

साधुओंको चाहिये कि, किसीके दोष नहीं प्रकाशे और गुणानुराग धारण करे तो अपने धर्मका अच्छा रास्ता बहुत प्राणियोंको दिखा सकेंगे गुणानुरागकी दृष्टि खोलनेके लिये क्षण २ में प्रयत्न करो. दुसरोंकी निंदा करनेसे इस जगतमें बडी २ लडाइएं हुई हैं इतिहास इस विषयकी साक्षी पूरे तौरसे कर्ते हैं परस्पर भिन्न धर्मवालाओंकी निंदा करनेसे उलटे वे सामने धर्म्म पर द्वेष धारण करते हैं इससे बहुत काल पर्यंत वे सत्य धर्म्मके उपासक नहीं बन सकते हैं

स्वधर्म्मके सत्य विचार दर्शाना, पर धर्म्मके जो असत्य विचार हो उनको भी युक्ति तथा मधुर वचनसे समझाना. सत्य धर्म्मका स्थापन करना और असत्य जिससे करोडो मनुष्य दुर्गतिमे पडे उसका अनेक सिद्धान्तो तथा युक्तियोसे खंडन करनेसे गुणानुराग नाश नहीं होता है किसीकी जाति

निंदा करना योग्य नहीं है सत्य धर्म गुणोंसे भरा हुआ है इस लिये इस पर अनुराग करो अन्य धर्मके अनुआई मनुष्योंके विद्यमान दोष पर परत्वजात टीका न करनेसे अन्य धर्मके मनुष्य भी सत्य धर्मके सहवासमें आयेंगे और सत्य धर्म ग्रहण करेंगे.

किसी स्वधर्म बन्धुकी मत्सरसे निंदा करना योग्य नहीं है सदा निंदाका भाषण त्याग करनेसे जैन धर्मकी उन्नति हो सकती है परन्तु आलावा इसके सद्गुण दृष्टि धर्म तथा देशकी उन्नति भी भले प्रकार हो सकती है.

प्रियमित्रो ! आजकी बात पूरे पुरी मनन करने योग्य है यदि तुम इस एकही वातको त्यागकर गुणानुराग धारण करोगे तो सब सिद्धियां तुम्हारे पास अपने आप आजायेंगी किसी दुसरे गच्छ या पंथवालेकी भी कभी निंदा मत करो चाहे उसका पंथ पाखंडीयोंका निकालाहुआ क्यों न हो सिरफ कहनेका तात्पर्य यह है कि, किसी तरहसे निंदा मत करो.

लो अब जाता हूं

नवम् दिन.

उत्तम पूरुष.

प्रियमित्रो ! आजकी बातमें यह विषय आने वाला है कि, उत्तम पुरुष किसे कहते हैं और वे क्यों सदा वंदनीय हैं तथा मनुष्य होने परभी देव शक्ति उनके हाथमें रहती है वह कैसे ?:—

पिच्छइ जुवई रूवं, मणसा चिंतेइ अहव खणमेगं;
जीना मरइ अकज्जं पथ्थिज्जंतो वि इत्थीहि.
साहुवा सड्ढोवा, सदार संतोस सायरो हुज्जा;
सो उत्तमो माणुस्सो, नायवो थोव संसारो
पुरि सथ्थेसु पवट्टइ, जो पुरिसो धम्मअत्थ पमुहेसु;
अन्नुन्नमवाबाहं, मज्जिमरुवो हवइ एसो.

जिनके अङ्गो अङ्गमें यौवन भराहुआ है और सुगंधसे अङ्ग बहकरहा है तथा अतयन्त रूपवती स्त्रियोंमें बसते हुए भी जो ब्रह्मचर्य पालकर शीलवंत रहे हैं वे सर्वोत्तम हैं और सदा वंदनीय हैं.

रूपवती युवान स्त्रियोंके साथ संगत होने पर भी जो पुरुष मनमें क्षणवार डगा है परन्तु कुकार्यमें फसते पहिले वैराग्यसे मनको वापिस खेंचले और अकार्यका पश्चाताप करे आत्मभावसे पूरे पूरा मनमें पश्चात्ताप करे और पुनः उस जन्ममें स्त्रियोंकी तरफ राग भाव नहीं करे तथा वैराग्य भावमें रहे तो वह उत्तमोत्तम तथा बलवन्त गिना जाता है रूपवती युवान स्त्री क्षण भर इच्छा करे अर्थात् भोग भोगनेकी अभिलाषा करे परन्तु उसकी प्रार्थना परभी कुकार्यमें प्रवृत्ति न करे तथा साधु हो तो साधु अवस्थामें श्रावक हो तो श्रावकावस्थामें रहनेसे उत्तम पुरुषोंमें गिनती होती है

धर्म, अर्थ और कामको हानी न हो वैसी अवस्थामें रहने वाला मध्यम पुरुष गिना जाता है स्त्रियोंके लियेभी ऐसाही समझना चाहियेः—

एएसि पुरिसाणं, जइगुणगहणं करेसि बहुमाणं;
तो आसन्नसिवसुहो, होसि तुमं नथ्थि संदेहो

हे मित्रो ! इन चार प्रकारके मनुष्योंका बहुत मान करोगे तथा उनके गुणोंको ग्रहण करोगे तो हे मित्र आत्मा-

ओ ! अल्प कालमें तुम मोक्ष सुखके भोगता बनोगे इसमें कुछ संदेह नहीं है.

उपलक्षण द्वारा अन्य व्रत और क्षमादि अन्य गुणोंको भी ग्रहण करो तथा उनके गुणोंका आदर करो अहो ! इस जगत में साधुओ तथा साध्वियोंको धन्य है कि, जिन्होंने परोप कारके लिये जीवन अर्पण किया है. श्रावक और श्राविकाएं गुणानुरागसे ऐसा खियाल करती हैं कि, अपन छ कायका कुटा करते हैं आरंम्भ करते हैं अतएव अपनसे साधु और साध्विएं अनन्त गुणा ऊंच हैं आत्म भोग देकर गृहस्थोंको उपदेश देते हैं दुःख वेदकर भी गांवो गांव विहार करते हैं करुणा बुद्धिसे गृहस्थोंको साधु व्रत देते हैं पुस्तकें लिखाकर सुधारते हैं गांवो गांव धर्मका वर्णन करते हैं ज्ञान देकर अज्ञानका नाश करते हैं साधु और साध्वियोंके बाहिरी व्रतभी ऐसे हैं कि, वे स्वपर हित साधक हैं, उन व्रतोंका अपनेमें कुछ ठिकाना नहीं है साधु और साध्वियोंकी निंदा करनेसे बिलकुल साधुके गुण नहीं प्राप्त होने वाले हैं उच्च क्रियादि गुण नहीं मिलने वाले हैं अतएव प्रिय मित्रो ! इस निंदा नामी राक्षसका अपनेमेंसे निकालकर अपने भारत भूमिके दूसरे भाइयों

व बहिनोंके अन्दरसे निकालनेका प्रयत्न करो. निंदा दोषको जीतने वालेके लिये मुक्ति पद मिलनेमें कुछ संदेह नहीं है

प्रिय मित्रो ! आजकी बातसे तुमको मालूम हुआ होगा कि, उत्तम पुरुषमें कैसे २ गुण होते हैं तथा उनके लिये मुक्ति बिलकुलही साध्य है अतएव तुम्हेभी इसी तरह वर्त्तन करना चाहिये. स्वदारा संतोष* व्रतको पालने वाला भी ब्रम्हचर्य पालने वाला कहलाता है.

दशम् दिन.

अल्प धर्म्मका बहुत मान.

प्रिय मित्रो ! कल मैंने तुमको उत्तम पुरुषोंके विषयमें कुछ कहाथा उसको तुमने अच्छी तरहसे सुना था यह बात तुम्हारे मुंहपरसे सिद्ध होती थी तथा यह भी सिद्ध होता था कि तुमने उस कामको करनेके लिये पूरा निश्चय कर लिया है समय व्यतित होता जाता है अतएव इन सब बातोको छोड़कर अपनेको अपना आवश्यक काम करना चाहिये, इस पंचम कालने इस संसार पर ऐसा प्रभाव डाल रक्खा है कि, महाधर्मिष्ट

* देव कल्पतरु नामक पुस्तक जो यहांसे अल्प कालमें प्रकाशित होगी उसे देखो. वरना श्रावक कल्पतरु जो आत्मानंद छपा है उसे देखो.

पुरुषतो विरले ही मिलते हैं इसलिये शास्त्रकारोंका कथन है कि, इस समयमें अल्प धर्म्म गुणका भी वहुत मान करोः—

संपइ दूसम समए, दीसइ थोवोवि जस्स धम्मगुणो;
बहुमाणो कायवो, तस्स सया धम्म बुद्धीए.

पंचम् आरा (कलिकाल) मे इस समय जिन पुरुषोमे अल्प भी धर्मगुण देखनेमे आवे तो उनका सदा धर्म बुद्धि से वहुत मान करो कारण कि, अल्प भी धर्म्म गुणका वहुत मान अपने आत्माको उच्च करता है वर्त्तमान. समयमे चाहे जैसा धर्म्मी हो तो भी वह अष्ट कर्म्मके उदयमे है, जहां तक कर्मोंका क्षय नही हुआ है वहांतक कोई निर्मल, गुणवन्त साधुभी दोषसे नही मुक्त हो सकता है अतएव गुण दृष्टिसे गुणोंको देखो, धारण करो और दोषों तरफ विलकुल लक्ष मत दो. गुणानुरागको कभी मत छोडो यही इस समयमें इस संसार रूपी अरण्यसे मुक्त होनेका मार्ग है इस समयमें जो गुणानुरागी हो वह तो वहुत ही धन्यवादका पात्र है कारण कि, आज कल गुणानुरागी पुरुषोंका प्रायः अभाव ही देखने में आता है वहुतसे कहते हैं कि, गुणानुरागमें कुछ नहीं

और मतीके अनुसार अर्थ करके विरुद्ध विचारमें आक्षेप खेंच कर ले जाते हैं दुसरोंके गुण श्रवण करनेसे कितनेको को वहुतही बुरा मालूम होता है यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि, दुषम कालमें गुणानुराग प्राप्त हुआ हो तो अल्प कालमें मुक्ति मिलेगी क्रिया रुचि के सामने ज्ञान रुचिकी प्रशंसा करे तो क्रियारु कुछभी निंदा किये विना नही रहेगी मनमेंभी वह २ किया करेगी. इस तरह ज्ञानधारीके सामने क्रिया रुचिकी प्रशंसा करेगे तो वैसाही बनेगा पुराने धर्मके विचारवालोंके सामने नये सुधारा करने वालेही न मालूम होगे दोष छोडकर गुण ग्रहण करना यह मुशकिल मालूम होगा वर्त्तमान समयमें तो अल्प धर्मका भी बहुत मान करनेकी आवश्यक्ता है कारण कि, अल्प धर्म गुण भी धारण करने वाले विरले ही होते हैं सर्व गुण वीतरागमें हे यदि तुम गुण लेना चाहो तो उनके चरित्रोंको पढकर लो दोषोंका प्रकाश करना तथा देखना बुरा है.

प्रियमित्रो ! आज अपने जो तीन रोजसे वाते चलती हैं ये तो बडी ही अमूल्य हैं परन्तु साथमें यह मत समझना कि, दुसरी अमूल्य नहीं है सो इन्हे ही ग्रहण करे. अब तो वातों

पुरुषतो विरले ही मिलते हैं इसलिये शास्त्रकारोंका कथन है कि, इस समयमें अल्प धर्म्म गुणका भी बहुत मान करोः-

संपइ दूसम समए, दीसइ थोवोवि जस्स धम्मगुणोः
बहुमाणो कायवो, तस्स सया धम्म बुद्धीए.

पंचम् आरा (कलिकाल) मे इस समय जिन पुरुषोंमे अल्प भी धर्म्मगुण देखनेमे आवे तो उनका सदा धर्म्म बुद्धि से बहुत मान करो कारण कि, अल्प भी धर्म्म गुणका बहुत मान अपने आत्माको उच्च करता है वर्त्तमान. समयमें चाहे जैसा धर्म्मी हो तो भी वह अष्ट कर्म्मके उदयमे है, जहां तक कर्म्मोका क्षय नही हुआ है वहांतक कोई निर्मल, गुणवन्त साधुभी दोषसे नही मुक्त हो सकता है अतएव गुण दृष्टिसे गुणोंको देखो, धारण करो और दोषों तरफ बिलकुल लक्ष मत दो. गुणानुरागको कभी मत छोडो यही इस समयमें इस संसार रूपी अरण्यसे मुक्त होनेका मार्ग है इस समयमें जो गुणानुरागी हो वह तो बहुत ही धन्यवादका पात्र है कारण कि, आज कल गुणानुरागी पुरुषोंका प्रायः अभाव ही देखने मे आता है बहुतसे कहते हैं कि, गुणानुरागमें कुछ नहीं है

और मतीके अनुसार अर्थ करके विरुद्ध विचारमें आशय खेंच कर ले जाते हैं दुसरोंके गुण श्रवण करनेसे कितनेको को बहुतही बुरा मालूम होता है यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि, दुषम कालमें गुणानुराग प्राप्त हुआ हो तो अल्प कालमें मुक्ति मिलेगी क्रिया रुचि के सामने ज्ञान रुचिकी प्रशंसा करे तो क्रियारु कुछभी निंदा किये विना नही रहेगी मनमेंभी बड २ किया करेगी. इस तरह ज्ञानधारीके सामने क्रिया रुचिकी प्रशंसा करेगे तो वैसाही बनेगा पुराने धर्म्मके विचारवालोंके सामने नये सुधारा करने वालेही न मालूम होगे दोष छोडकर गुण ग्रहण करना यह मुशकिल मालूम होगा वर्त्तमान समयमें तो अल्प धर्म्मका भी बहुत मान करनेकी आवश्यक्ता है कारण कि, अल्प धर्म्म गुण भी धारण करने वाले विरले ही होते हैं सर्व गुण वीतरागमें हैं यदि तुम गुण लेना चाहो तो उनके चरित्रोंको पढकर लो दोषोंका प्रकाश करना तथा देखना बुरा है.

प्रियमित्रो ! आज अपने जो तीन रोजसे बातें चलती हैं ये तो बडी ही अमूल्य हैं परन्तु साथमें यह मत समझना कि, दुसरी अमूल्य नहीं हैं सो इन्हे ही ग्रहण करे. अब तो बातों

को अच्छी तरह समझते हो या क्या. हां २ तुम्हारे कहने परसे तो यही विदित होता है. वर्त्तमान कालमें अल्प धर्म्मका भी बहुत मान करो. कारण कि, अल्प धर्म्म गुणको भी धारण करने वाले बिरले ही होते हैं.

—:-०-:—

एकादशम् दिन.

मोक्ष सुखका उपाय.

प्रियमित्रो ! अनादि कालसे जीवको कर्म्म *के बंधनसे अनंत संसारमें परिभ्रमण करके जन्म जरा और मरण सम्बन्धी तथा व्याधि आधि और उपाधि सम्बन्धी बहुत दुःख देखने पडते हैं इस लिये इन दुःखोसे मुक्त होनेके लिये शास्त्रकारोंने जो उपाय बताए हैं उनको श्रवण करो, गोर करो तथा उसके बराबर वर्तन करो जिससे तुम्हारा आत्मा धीरे

* बुद्धिघन नामका अति उत्तम पुस्तक है जिसको सिंघी समर्थमलजी शरिस्तेदार अदालत सिरोहीने छपवाया है उसमें कर्म्मगतिका बहुत अच्छी तरहसे वर्णन किया गया है पुस्तक एक अच्छे विद्वानकी लिखी हुई है.

२ ऊंच गतिको प्राप्त होकर आखिर में मोक्ष सुखके भावता बने.

उत्तम गुणानुराओ-निवसइ हिययंमि जस्स पुरिसस्स आतत्थयर पयाओ-न दुलहा तस्स रिद्धिओ ॥

जिनके हृदयमें उत्तम गुणानुराग होता है वे भव्यात्मा तिर्थङ्करकी सर्वोत्तम पदवियोंको प्राप्त करते हैं उनके लिये किसीभी प्रकारकी ऋद्धिए दुर्लभ नही होती है सर्व प्रकार की उत्तम पदवियोंका कारण गुणानुराग है किसीभी पदार्थकी प्राप्तिमें उसपर रागही प्रथम हेतुभूत है राग दो प्रकारका है प्रशस्यराग और दुसरा अप्रशस्य राग अप्रशस्य राग क्षणिक पदार्थो पर होता है इससे आत्माकी उन्नति नही होती है वहारी दुनियाके पदार्थ जो क्षणिक है उनको भ्रांतिसे अपने मान कर राग धारण करनेसे आत्मा प्रति दिन क्रोधादिक शत्रुओंके वशमें पडता है और कर्मकी वर्गनाओंको गृहण करता है रजोगुण और तमोगुण प्रवेश करते हैं सत्य गुणको प्राप्त नहीं कर सकते हैं मिथ्यात्व भावको धारण करते सुखके वजाये अपशस्य रागसे दुःख पैदा करते हैं और तीनों भुवनमें जराभी शान्तिका स्थान नही मिलता है अतएव

स्वप्न समान क्षणिक पदार्थमें राग करनेकी आवश्यकता नहीं है.

जगतमें सत्य आनन्दमय आत्मा है आत्मामें अनन्त गुण हैं काम क्रोधादिकको छोडकर जहां तहां आत्माके संतोष समता, विवेक और ज्ञानादि गुणोंका राग करो. बालक अथवा वृद्धमें चाहे जहां गुण हो उन्हे अवलोकन करो गुणका राग करनेसे अवगुण पर चित नहीं जायेगा. प्रथम साधक अवस्थामें गुणके रागकी अवश्यकता है गुणानुरागके उत्तम उत्तम संस्कार धारण करनेसे पुनः होने वाले जन्ममें वे गुण स्वमेव आत्मामें प्रगटते हैं साधन भी गुणानुरागकी वृद्धिके लिये प्राप्त होते हैं जो ॰ ऋद्धिए दुर्लभ होती है वे भी गुणानुरागीको मिलना सहल होजाती है गुणानुरागी दूसरों पर सुदृष्टिसे देखता है इस लिये उसको भी दूसरे जीव प्रेमभावसे देखते हैं As you so so shall you reap. तात्पर्य यह है कि, गुणानुरागसे उत्तम पदार्थ प्राप्त होती हैं

गुणरयणमंडियाणं, बहुमाणं करेइ सुद्धमणोः
सुलहा अन्नभवंमिय, तस्स गुणा हुंति निः

गुण रत्नोसे विभूषित पुरुषोंका कोई शुद्ध मन वाला
बहुत मान करे तो उसको वे २ गुण पर भवमें सुखसे
प्राप्त होते हैं.

एयं गुणानुरायं, सम्मं जोधरइ धरणि मज्जंमि;
सिरिसोम सुंदरपयं, सो पावइ सव्वन मणिज्जं ॥

जो आत्मार्थी पुरुष अच्छी तरह जगतमें गुणानुराग धारण करेगा तो वह अभ्यंतर लक्ष्मी युक्त उत्तम पदको प्राप्त करेगा गुणानुराग धारण करना चाहिये कारण कि, उसके धारण करनेसे उत्तरोत्तर मोक्ष मिलता है ज्यों २ गुणानुराग धारण करनेमें आवे त्यों २ दृष्टि दोष टलता जाता है.

प्रियमित्रो ! मैंने जो कहनेका था सो कह दिया आप लोगोंने सब बातें अपने हृदयमें रक्खी होगी ऐसी मुझे आशा है परन्तु आपका हृदयमें रखना उतना अच्छा नहीं है जितना कि, आप उस माफिक वर्तन करके अपने इस जीवनको सार्थक करे तो मोक्ष सुखके भोक्ता बने इसमें कोई संशय नहीं है कारण कि, मोक्षका प्रथम द्वार गुणानुराग ही है.

समाप्तम्.

अमृतसिंधु, उपनाम अमृत रत्नागर.

इस औषधके लिये कोई रोग असाध्य नहीं है यह अमृ-तसिंधु अमृतका समुद्र है जो बहुतही प्रभाविक तथा गुणकारी औषधी है यह बालकसे लगाके वृद्धतकके उपयोगकी चीज है बाल्यावस्था वालेको केवल इसकी दो बुंद और बारह वर्षसे अधिक अवस्था वालेको केवल १२ बुंद देनेसे हरएक प्रकारके रोग नष्ट होजाते हैं जैसे कि, स्वांस, खांसी, हैजा, फोडा, फुन्सी सर्व प्रकारके बवासिर, सर्व प्रकारके बच्चोंके रोग, सूजन, वीर्य दोष, स्त्रियोंके रोग, सिरदर्द, जुकाम, ज्वर, शूळ, सर्व प्रकारकी पेटपिडा, अरुचि, अतिसार, संग्रहणी, दांतपीडा, कर्णरोग, नासिकारोग, गला बैठना, वायगोला, प्रसुतरोग, कामला, कमरदर्द, हृददर्द, जलोदर, दर्दगुदा, मुत्रपीडा आदि सर्व प्रकारके रोग इस औषधके सेवनसे नाशत्वको प्राप्त होते हैं.इस औषधको यदि कोई तंदुरस्तिकी हालतमें हमेशा अपने काममें लावे तो उसकी तंदुरस्ति बहुत अच्छी रहती है परन्तु यह याद रहे कि, तंदुरस्तिकी हालतमें इसकी बचेको १ बुंद और १२ वर्षसे अधिक उम्र-

वालेको ६ बुंद लेनी चाहिये. एक औन्सकी शीशी ॥) तथा ढाई ओन्सकी शीशीके १=).

चंद्रमुखी करण.

यह दवा बहुतही मशहूर है इसकी बदनपर मालिस करनेसे चेहरा खूबसुरत होता है और चमडी सुर्ख व सुफेद मक्खनके माफिक मुलायम होजाती है. जिसमेंसे खुशबूकी प्यारी २ लहेर निकलने लगती है इतनाही नहीं जाडेके दिनोंमें इसकी मालिस करनेसे चमडी नहीं फटती है तथा फटीहुई चमडी पर इसकी मालिस करनेसे उसको फोरन आराम करता है. कीमत फी बोतल ॥)

टोनीक शर्बत.

इस शर्बतमें यह तारिफकी बात है कि, इसकी २ बूंद गलासभर पानीमें डालनेसे सारेपानीको मीठा करता है तथा बिगडे हुए खुनको सुधारता है नारिंगी, केवडा, गुलाब आदि हरएक तरहका भेजा जाता है एक शीशीका रु. १) एकमे ९८ गलाससे अधिक पानी तैयार होसकता है.

दद्रुनाशक चुर्ण

तीन दफा लगानेसे सब तरहका दाद, खा
रोग २४ कलाकके अन्दर जाते हैं इससे चमडी का
होना है की० ।)

हिमसागर सुरमा.

इसको आंखमें लगानेसे सर्व प्रकारके आंखके रे
हो जाते हैं यह बहुतही ठंडा है फि तोला १।।)

मिलनेका पताः—

एजेन्ट सिंघी गेनमल.
एजेन्ट.
Amrit Sindhu Office
Sirohi.

सिंघी गेन
एजेन्ट.
अमृतसिंधु ऑफि
सिरोही राज

श्री तेरापंथ किशोर मंडल
बीकानेर

जैन दर्शन में तत्त्व-मीमांसा

—मुनि नथमल